शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (463-467) April- June 2019

किशोर बालक एवं अवसाद

डॉ0 मिली पाल
असि0 प्रोफे0, मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष
मुरादाबाद मुस्लिम डिग्री कॉलिज
कटघर, मुरादाबाद (उ0प्र0)
Email: milipal5151@yahoo.com

सुजल पाल
कालिज ऑफ हायर स्टडीज,
बी0एड0 विभाग, प्रयागराज (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध में किशोर बाल अपराधी व सामान्य किशोर बालकों में अवसाद–अवसाद रहित व्यक्तित्व विमा का अध्ययन किया गया है। किशोरो में अवसाद के प्रभाव को जानने के लिए प्रस्तुत शोध में 120 किशोरों का चयन कर डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित D.P.I-B की सहायता से अवसाद व अवसाद रहित व्यक्तित्व विमा का मापन किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर देखा गया कि सामान्य किशोर बालकों की अपेक्षा बाल अपराधी बालकों में अवसाद की स्थिति उच्च है।

मुख्य शब्द–*किशोर बालक, अवसाद।*

प्रस्तावना

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंत काल माना जाता है। यह समय 12–19 वर्ष तक होता है। इस काल में सभी प्रकार की मानसिक व शारीरिक शक्तियों का विकास होता है। विशेषज्ञों का मानना है कि व्यक्ति के भविष्य में जो कुछ होता है, उसकी पूरी रूप रेखा किशोरावस्था में बन जाती है। बाल्यावस्था के बाद किशोरावस्था में बालक कई शारीरिकि व मानसिक परिवर्तनों से गुजरते है जिसके कारण वह बहुत सी व्यावहारिक समस्याओं का सामना करते है जैसे– उत्साहीनता, जिद्दीपन, निष्क्रियता, निराशा, अवसाद आदि। किशोरों को इन समस्याओं से मुक्त करना अति आवश्यक है क्योंकि यह हमारे कल की नींव है।

ग्रफिक नोट

भारत में सर्वाधिक किशोर संख्या

भले ही चीन दुनिया की सबसे बडी आबादी वाला देष है, लेकिन जहॉ तक किषोर उम्र (10 से 19 वर्श तक) के बच्चों से किसी भी देष के मुकाबले सबसे ज्यादा किषोर भारत में है। ऐसे में उनकी ज्यादा सुरक्षा व सही मार्गदर्षन करने की जिम्मेदारी भी हमारे देष की बनती है।

भारत 24.3 करोड़
चीन 20.1 करोड़
विश्व 01.2 अरब

विश्व जनसंख्या में किशोरो का अनुपात 18 फीसदी है।

इसका मुख्य कारण है कि चीन में एक बालक नीति प्रभावी है जबकि हमारे देश में कोई प्रतिबंध नहीं है। ऐसे में किशोरो की इतनी विशाल आबादी आगे चलेकर हमारे देश के लिए एक बड़ी ताकत सावित हो सकती है।

आज किशोरो में अवसाद की स्थिति निरन्तर बढ़ती जा रही है। **विक्रेनी तथा कारवेनिक** (2001) ने अपने 13 वर्षों के अनुभव के आधार पर यह स्पष्ट किया कि सभी बालक किसी न किसी अवसाद, तनाव, चिन्ता आदि से ग्रसित है और अनुमान है कि लगभग हर वर्ष, पिछले वर्ष की तुलना में अपेक्षाकृत अपराधों में तीन गुना बढ़ोत्तरी पायी जाती है। किसी भी बालक में अपराधिक प्रवृत्ति होने में जैविक और अजैविक पर्यावरणीय मनोवैज्ञानिक कारको का हस्तक्षेप होता है वास्तव में व्यक्तित्व इन सभी कारको का प्रतिफल है।

ड्रेवर के अनुसार, ''व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है, जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान–प्रदान में व्यक्त करते है।

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में शारीरिक, मानसिक, नैतिक व सामाजिक गुण होते है। वे एक–दूसरे से विशिष्ट प्रकार से सम्बन्धित होकर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से भिन्नता प्रदान करते हैं। वातावरण समान होने पर भी प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार भिन्न–भिन्न होता है। जिसके कारण उस वातावरण के साथ समायोजन करने का ढंग भी प्रत्येक व्यक्ति मे भिन्न होता है।

व्यक्तित्व में संगठित गुणों के होने से बालकों का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है। जिससे वह समाज में मान्य नियम–कानून के अनुरूप अपने व्यवहार को समाज के समक्ष प्रदर्शित करते है। इसके विपरीत विघटित व्यक्तित्व में बालक अपने व्यवहार को समाज के समक्ष समाज

विरोधी कार्य व हिंसात्मक रूप में प्रदर्शित करते है। उम्र के बढ़ते पड़ाव के साथ ही बच्चों के व्यवहार में सहनशक्ति भी कम होती जा रही है। वह अपनी समस्यायें खुलकर व्यक्त नहीं कर पाते, अन्दर ही घुटन महसूस कर रहे है। इन बच्चों पर परिवार की दृष्टि न पड़े और वक्त रहते उनकी समस्याओं का निराकरण नहीं किया तो वे अपराधी कदम उठाते है।

मनोचिकित्सक डॉ0 कार्तिकेय के अनुसार बच्चों का अपने परिजनों से संवाद न होना बड़ी बजह है। पहले संयुक्त परिवार में बच्चें रहते थे तो वह लगातार परिवार की नजर में रहता था, उस पर ध्यान रखा जाता था लेकिन आज की दौर में बच्चों पर ध्यान न दिये जाने पर वह भटक रहे है। जिसका कारण कही न कही एकल परिवार भी है।

सम्बन्धित अध्ययन –

- **क्लार्क (1961) –** ने अपने अध्ययन में यह देखा कि परिवार में जब प्रतिबल परिस्थितियां अध्ययन होती है तो बालक के अपराधी बनने की अधिक सम्भावना होती है। इस अध्ययन में क्लार्क ने पाया कि लगभग एक तिहाई बाल–अपराधी तनावपूर्ण घटनाओं के कारण बाल अपराधी व्यवहार अपनाते है।
- **ब्रेकर (1966) व कोन्नर्स (1968) –** के व्यक्तित्व शीलगुण मापन सम्बन्धी अध्ययन में देखा गया कि प्रथम जन्मक्रम वाले बच्चे बाद में जन्मे बच्चों की तुलना में दूसरों पर अधिक निर्भर तथा सामाजिक समरूपता दिखाने वाले होते है। यह अवसादग्रस्त परिस्थिति में अधिक सबंधन की प्रवृत्ति दिखाने वाले सामाजिक दबाव में अधिक आने वाले, अधिक डरने वाले, चिंतित रहने वाले होते है। इसके अतिरिक्त प्रथम जन्मक्रम वाले बच्चों में जहॉ एक ओर उपलब्धि अधिक होती है, वहॉ उनमें आत्मकेन्द्रिता, स्वार्थीपन, रोबदारी दिखाने की प्रवृत्ति जैसे गुण विकसित होते है।
- **ग्लोवर, एस व अन्य (1978) –** ने अध्ययन में पाया कि सामाजिक वातावरण व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते है। जो उनमें सकारात्मक वातावरण संवेगात्मक प्रसन्नता तथा अवसाद से रहित व ऊर्जा प्रदान करते हैं। परिणामस्वरूप सुसभ्य वातावरण से अपराधिक प्रवृत्तियों में कमी देखी गयी।
- **ब्रेडवरे बी (2007) –** ने अपने अध्ययनों में देखा कि बालकों के व्यक्तित्व का निर्धारण आर्थिक–सामाजिक स्थिति से होता है यदि बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती तो ऐसे में वह समाज विरोधी व अनैतिक कार्यो में सक्रिय हो जाते है।

किशोरों के अवसाद से सम्बन्धित संकेतो को समझना आवश्यक है जिससे समय रहते उनके व्यवहार का निरीक्षण कर तथा उनकी सहायता कर सकते है। यह संकेत निम्न है –

- सम्बन्धियों और मित्रों से अलगाव ।
- निराशाजनक, शक्तिहीन तथा निस्सहाय बाते करना।
- स्वयं को चोट पहुॅचाने का प्रयत्न करना।

- खाने–पीने की आदतों में सार्थक परिवर्तन ।
- लम्बे समय से बीमार रहना या आकस्मिक असमर्थता ।
- स्पष्ट आत्म घृणा या द्वेष या दूसरों को मारने की बात करना।
- अवसाद की अवस्था या आक्रामकता में एल्कोहल या ड्रग्स का अधिक सेवन करना।
- विद्यालय प्रदर्शन और सामान्य व्यवहार में अविशिष्ट परिवर्तन ।
- व्यक्तित्व व व्यवहार में आकस्मिक परिवर्तन ।

उद्देश्य – किशोर बाल अपराधी बालक एवं सामान्य बालकों के अवसाद–अवसाद रहित व्यक्तित्व किया का अन्तर ज्ञात करना।

चर – स्वतंत्र चर – बाल अपराधी व सामान्य बालक

आश्रित चर – अवसाद–अवसाद रहित व्यक्तित्व

शोध परिकल्पना–किशोर बाल अपराधी बालक एव सामान्य बालकों के अवसाद–अवसाद रहित व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर होगा।

प्रतिदर्श–प्रस्तुत अध्ययन में 60 किषोर बाल अपराधी बालक मुरादाबाद किशोर संप्रेक्षण ग्रह से व 60 सामान्य बालक मुरादाबाद के विभिन्न विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को लिया गया।

उपकरण–प्रस्तुत अध्ययन हेतू डॉ0 महेश भार्गव द्वारा निर्मित व्यक्तित्व विमा मापनी D.P.I-B का प्रयोग किया गया। जिसमें अवसाद–अवसाद रहित व्यक्तित्व विमा के स्तर का अध्ययन किया गया।

परिणाम – शोध परिणाम निम्न तालिका संख्या –1 में प्रदर्शित किये गये है।

तालिक संख्या – 1

व्यक्तित्व विमा	माध्य Mean	मानक विचलन S.D.	माध्य Mea	मानक विचलन S.D.	टी मूल्य t – value	सार्थकता का स्तर .05 व .01 *
अवसाद – अवसाद रहित	13.35	3.17	5.15	4.77	9.73	सार्थक

परिणामों की विवेचना

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बाल अपराधी बालकों व सामान्य बालकों के अवसाद–अवसाद रहित व्यक्तित्व की भिन्नता को परिलक्षित कर रहे है।

निष्कर्षतः परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किशोर बाल अपराधी बालकों में अवसाद का स्तर माध्य 13.35 है जबकि सामान्य बालकों में माध्य 5.15 है जो कम अवसाद को स्पष्ट करते है। t-value 9.73 है अतः यहॉ परिकल्पना .05 व .01 पर सार्थक सिद्ध होती है। परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट है कि किशोर बाल अपराधी बालकों में अवसाद का उच्च स्तर उनके नकारात्मक परिस्थिति, मानसिक अस्वस्थता, शारीरिक दुर्बला आदि कारणों से है। जबकि सामान्य बालकों में अवसाद रहित स्थिति का मुख्य कारण उनका स्वस्थ पारिवारिक

वातावरण, सकारात्मक चिन्तन, स्वस्थ मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य है। जिससे बालक अपने सभी कार्यो को ऊर्जावान रूप में करते है।

निष्कर्ष

परिवार व विद्यालयों के उचित सहयोग व मार्गदर्शन से बालको की विभिन्न समस्याओं का निराकरण करना आवश्यक है जिसके आधार पर ही विभिन्न समस्याओं का समाधान सम्भव होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. Albert C. : *Delinquency Boys.* The Culture of Gang 1855. Gkebcie, illinuis : free press, U.S.A.
2. Carmichall. Leonard : *Manual of Child Psychology.*
3. Cole, Luella : *Psychology of Adolescence*.
4. Cole & Morgan : *Psychology of Childhood & Adolescence.*
5. Decoster, S. : "*Delinquency and Depression : A Gendered Role* – Talking and Social Learning Perspective, 2003.
6. Lanza M. (1998). *Faith speeds recovery from Depression.* American Jornnal of Psychaitry, Vol. 155. **536-572**.
7. Moffitt, T.E : *The Neuropsychological studies of Juvenile Delinquency*, 1990.
8. Medinnus & Johrson : *Child & Adolescent Psychology.*
9. Rutter, M : *Antisocial behaviour by young people* combridge university press, New York, 1998.
10. Roim, L.R. : *Personality of Individual Differences,* 1990.
11. William. H. S. : *The variebies of Delinquency* Youth. 1949.